भगवत् कृपा

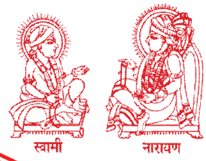

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम को पाये

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

वर्ष 27 अंक : 5 | 15.9.2004 बुधवार (सितंबर-अक्तुबर) | प्रति अंक : 10.00

दीवाली और नूतनवर्ष के शुभाशीष

वर्ष के अंत में दीपावली आती है और दूसरे दिन से नया वर्ष शुरु होता है।
उस बीच की 'संध्या' के दौरान
हमारे जीवन का लेखा-जोखा और नूतन वर्ष के नवीन क्रांतिकारी दर्शन के साथ-साथ
एकांतिक धर्म सिद्ध करने के लिए साधक वर्ग को
गुरुमुखी बन कर नया पैगाम शुरु करना होता है।
इच्छा, क्रिया या स्वरूप के ज्ञान का इस प्रकार समन्वय करके
निश्चित आदर्श तथा ध्येय तक जल्दी से जल्दी पहुँच कर
उसमें ढलने की तीव्र लगन या अभिप्सा के साथ की
यह ज्ञानदृष्टि और उसके मुताबिक का ही वर्तन
वह हमारी मूलभूत साधना की सीढ़ी है।
स्वामी की बात प्र.11, 125 तथा 'प्रगट की परावाणी' प्र.13, पृष्ठ 190 में
गुरुहरि योगीजी महाराज द्वारा बताने के मुताबिक
'सुधन्वा' धर्म वाला और निष्ठा में भी उच्च था, लेकिन श्रीकृष्ण का अभिप्राय नहीं समझ पाया,
तो आख़िर स्वयं श्रीकृष्ण ने अर्जुन के पक्ष में खड़े रह कर सुधन्वा को मरवाया
और
व्यवहारिक बुद्धि से सामान्य दिखाई देता, लेकिन उनका वचन अध्धर झेलने वाले
अर्जुन को नारायणस्वरूप बना कर अपने साथ बिठाया और 'नरनारायण' के रूप में भजवाया।
इसी न्याय से आज 'भक्त सहित भगवान' की निष्ठा से सेवा और भक्ति करने वालों को-वे जहाँ हैं वहाँ
गुरुहरि अक्षरधाम का सुख देकर **एक दिव्यचेतना का समाज** खड़ा कर देते हैं।
अन्यों को उसका अनुभव भी होता है।
हमारे यहाँ 'परोक्ष' की तो बात ही नहीं है।
पर, उपरोक्त – **'आसरे वाले**' की अपेक्षा **आज्ञा** का संबंध बढ़े
और
उसकी अपेक्षा अखंड अनुसंधान वाली **अनुवृत्ति** का संबंध बढ़े

और आख़िरकार
सुहृद्भाव और निर्दोषबुद्धि के सिद्धांत पर प्रगट स्वरूप का **अभिप्राय** समझ कर दिव्य जीवन जीने वाले का **आध्यात्मिक** संबंध सर्वोत्तम कहा जाए।
तो, आज्ञास्वरूप में से अब गुरुजी की ही अनुवृत्ति के मुताबिक का
दिव्य जीवन जीने का हमारा ठहराव दृढ़ और कायम रहे
और
संबंध वाले मुक्तों की महिमा का पल-पल साक्षात्कार करके
गुरुहरि के अभिप्राय के मुताबिक का ही जीवन जीया जाए,
वह हमारा अंतिम आदर्श गुरुहरि पूर्ण करें यही अभ्यर्थना है।

'इच्छारहित वर्तना' - वह आत्मा का सनातन धर्म है और एकांतिक धर्म सिद्ध करने की पूर्वभूमिका है।
इसका आसान उपाय–
गुरुहरि और उनके अभिप्राय को जानने वाले एकांतिकों के प्रति सद्भाव है।
यूं साधन से नहीं, परंतु **प्रगट स्वरूप** के प्रति केवल सद्भाव मात्र रखने से ही
निर्वासनिक होने पर बड़े सत्पुरुष **के वचन से सेवा** करने वाले को
'परोक्ष' के जैसी ***'प्रत्यक्ष' में प्रतीति*** होती जाती है
और
समग्र सत्संग को यानि कि *'स्वामिनारायण'* का नाम मात्र लेने वाले को भी दिव्य मानने पर–
अपरंपार महिमा समझ में आने से भीतर में **अनुवृत्ति** प्रगट होती है।
उसके बाद 'अभिप्राय' के मुताबिक के जीवन में ऐसे साधक को **'महेळाव के सात संकल्प'*** सिद्ध करने की तान रखनी है।
वह है उसकी **नैष्कर्म्यसिद्धि** या **परमसिद्धि** !
निष्ठा वाले मुक्तों को ऐसा स्वरूप के ज्ञान का तथा महिमा का साक्षात्कार
गुरुहरि जल्दी ही पूर्ण कराएं
यही इस नूतन वर्ष पर उनके चरणों में गद्गद् भाव से प्रार्थना !

– प.पू. काकाजी महाराज
संवत् 2024

---

*
हे शास्त्रीजी महाराज !

*१. आपके संबंध में आए हुए कैसे भी हों, हम उन्हें सिर के ताज के समान मानें – ऐसा आशीर्वाद दीजिए। **'तुलसी ज्याके मुखन से....'** उनके साथ मनमुटाव न हो; उन्हें हम पहचान पाएं ऐसी सुबुद्धि दीजिए। आपके जैसी सुबुद्धि हमें प्रदान कीजिए।*

२. हम आज प्रार्थना करें और कल पलट जाएं–ऐसा न हो यह प्रार्थना है।

३. दिन-रात हम आपकी प्रार्थना करें, आपकी ही स्मृति में रहें, एक क्षण के लिए भी आपको भूलें नहीं...। आपके प्रति जो भाव है, वैसा ही भाव आपके भक्तों के प्रति भी रहे, मनुष्यभाव न आए। आप साक्षात् कैवल्यमूर्ति हो, पर आपके भक्तों को भी कैवल्यमूर्ति मान सकें ऐसे आशीर्वाद दीजिए। आपके भक्तों में हमें दिव्यभाव रहे ऐसा कर दीजिए।

४. कभी भी भगवान और संत को हम मोहताज़ न करें ऐसी बुद्धि देना। हमारे मन में कभी बदलाव न आए। सदा एक दृढ़ मति रहे ऐसी प्रार्थना है।

५. कभी भी हम मनमुखी न रहें। मनमुखी (रहना) बाहर से तो बढ़िया गुण दिखाई पड़ता है, किन्तु वह गुण नहीं कहा जा सकता है।

६. ऐसा (भव्य) संबंध हुआ, अब हम शोक में परेशान न रहें। नित्य आनंद में रहें। हम में क्रोध, दगा, प्रपंच, मान न रहे– यही दीजिए।

७. आप निर्दोषबुद्धि के भूखे हो। आपके भक्तों में यदि हम निर्दोषबुद्धि रखेंगे तो आप हम से प्यार रखोगे; यदि (निर्दोषबुद्धि) नहीं रखेंगे तो आप हमें अपने पास फटकने भी नहीं दोगे–दूर कर दोगे।

आया, उमंग-उल्लास से भरपूर त्यौहारों का झुरमुट....

मंगल पर्वों की श्रृंखला, हर साल की तरह नई दुल्हन की भांति ठुमक-ठुमक कर चलती, पायल की मधुर घुंघरुओं की झंकार लेकर, हमारे द्वार तक पहुँचने की मानो तैयारी कर रही है। एक ओर हिन्दु संस्कृति को प्रज्वलित करने-जीवंत रखते ये सभी त्यौहार रौनक-शौनक एवं उत्साह-आनंद-उमंग के प्रतीक रूप हैं; तो दूसरी ओर प्रगट गुणातीत स्वरूप को ही अपने जीवन के केन्द्र में रख कर जीने वाले भक्तों के लिए ये सभी त्यौहार आध्यात्मिकता में अधिक तीव्रता से अग्रसर होने के सोपान रूप बनते हैं। वे सोपान हैं–

1 अक्तुबर– *प.पू. दिनकरभाई का प्रागट्य दिन*

22 अक्तुबर– *दशहरा, प्र. ब्र. स्व. प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी का पार्षदी दीक्षा दिन*

28 अक्तुबर– *शरद्पूर्णिमा,*
मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी का प्रागट्य दिन,
प्र. ब्र. स्व. प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी का भागवती दीक्षा दिन,
प.पू. दिनकरभाई की प्रागट्य तिथि

10 नवंबर– *धनतेरस,* ***दिल्ली-मंदिर में 'महापूजा' – सायं 7:30 से 9:00***

12 नवंबर– *दीवाली*

13 नवंबर– *अन्नकूट, वार्षिक स्नेहमिलन-एन्युअल गेट टु गेधर-नूतन वर्ष प्रारंभ*

इन सभी त्यौहारों की सार्थकता तो प्रत्यक्ष स्वरूपों के अंतर की प्रसन्नता प्राप्त करने में ही निहित है।

तो आइए, इन मंगल अवसरों पर आशीर्वाद प्राप्त करने का यह सुनहरा मौका हम कहीं चूक ना जाएं। इस हेतु हम सब प.पू. काकाजी द्वारा १९६७ में लिखवाए एक लेख–***'अनोखा अक्षरमत'*** को मन की नीरवता एवं पूर्ण एकाग्रता से पढ़ें...

बरसों पहले के इस लेख से स्पष्ट पता चलता है कि प.पू. काकाजी अपने संबंध में आए संतों, युवकों, बहनों, गृहस्थों की आध्यात्मिक समझदारी को किस कक्षा पर देखने की दिली तमन्ना-चाहना रखते थे।

इस लेख का एक-एक शब्द अपने आप में इतनी अधिक गहराई लिए हुए है कि दो या तीन बार पढ़ने पर भी शायद समझ में न आए। परंतु यदि इन प्रसादी के शब्दों को हम एक मात्र प्रत्यक्ष गुणातीत स्वरूप की ओर नज़र रख कर अंतर की दिव्य किरणों के प्रकाश में निहारेंगे, तो हर एक मुमुक्षु को अपने-अपने नज़रिये के मुताबिक–अपनी-अपनी कक्षा के मुताबिक अनेक प्रश्नों का समाधान मिलेगा और अगर हमने इसे अपने जीवन का आधार बना कर निरंतर अभ्यास किया, तो एक नई दिशा-आध्यात्मिक नवजन्म की ओर हम जरुर अग्रसर हो पाएंगे...

तो, सर्वप्रथम इसे समझने का हम स्वयं भरसक् प्रयास करें, अन्यथा हमें मिले प्रत्यक्ष स्वरूप द्वारा वह समझें। इससे भी अधिक प.पू. काकाजी के इन प्रासादिक शब्दों को ही सिर्फ निहारेंगे-प.पू. काकाजी का भीतर से गुण लेंगे, तो भी संत के साथ एक दिव्य संबंध स्थापित हो ही जाएगा। ऐसी मंगल भावना से यह लेख निम्न प्रस्तुत है !

अनोखा अक्षरमत :–

पहले जो आचार्य हो गए, उनमें किसी ने *'ज्ञान'* को प्राधान्य दिया, किसी ने *'भक्ति'* को प्राधान्य दिया
और
किसी ने *'तप-त्यागादिक'* साधन प्रधान माने।
यूं हर एक ने अपनी-अपनी अलग रुचि के आधार पर संप्रदाय चलाये।
भगवान स्वामिनारायण ने प्रत्येक संप्रदाय के मतों में जो विशुद्ध तत्त्व देखे उन्हें मान्य रख कर
सभी शास्त्रों के निचोड़ रूप सिद्धांतों को स्थान देकर सुई के साथ-साथ आसानी से निकलते पिरोए धागे की भाँति
अक्षररूप होकर पुरुषोत्तम को धारने का निजी अचल सिद्धांत-'अक्षरमत' प्रवर्ताया है।
भगवान स्वामिनारायण ने स्वयं के धाम, मुक्तों एवं ऐश्वर्य सहित इस पृथ्वी पर उनके अवतरित होने का कारण और रहस्य
अपने जीवन और कार्य द्वारा एवं वचनामृत के ग्रंथ द्वारा खूब स्पष्टता से समझाया है।
फिर भी *'गुणातीतभाव'* की या *'अक्षरमत'* की विशिष्टताएं संप्रदाय में या बाहर

सामान्य तौर पर अभी तक आसानी से सभी समझ नहीं पाए हैं।
पर, इस ज्ञान की दृढ़ता के बिना-यानि, ऐसे *'गुणातीत ज्ञान'* की दृढ़ता के बिना
विपरीत कठिन माहौल में आत्यंतिकी मुक्ति के मार्ग पर चलते कई कसरें रह जाती हैं।
ऐसा *'गुणातीतभाव'* मूल आत्मा का सनातन भाव है जो त्रिकाल से निर्बंध है।
एकांतिकी की रीति, नीति और स्थिति शास्त्रोक्त रूप से साकार करने
भगवान स्वामिनारायण उनके साथ पराभक्ति के आदर्श रूप एवं आत्यंतिकी मुक्ति के एक अनिवार्य तत्त्व रूप
उनके सनातन अक्षरधाम को मूर्तिमान साकार स्वरूप में-मनुष्याकार में लाए
जो सत्संग में गुणातीतानंदस्वामी के रूप में पहचाने गए।
अनादि महामुक्त गोपाळानंदस्वामी द्वारा इस मर्म का प्रतिपादन भी हुआ
और
शुद्ध गुरु परंपरा जारी रखी जो हमेशा लगातार चलती रहेगी।
ऐसे गुणातीत स्वरूप की अखंडितता को पहचान कर उनके संबंध में आना ही सच्चा *'भक्तपन'* बताया
और
'एकांतिकभाव' की सिद्धि भी उनके द्वारा ही हो सकती है– यह स्पष्टता भी कर दी।
ऐसा *'गुणातीतभाव'* जो कि भगवत् स्वरूप संत द्वारा जीवन में सिद्ध करना है,
उसके लिए अक्षरमत के मुताबिक *'अक्षरब्रह्म'* की अनिवार्यता किस प्रकार है, वह यहाँ सरलता से बता रहे हैं।
श्रेयार्थी बुद्धिशाली वर्ग इसे भली भाँति समझ ले
और
सच्चे संत के प्रसंग से–उसके मुताबिक वर्तने से आध्यात्मिक अनुभव अवश्य होगा–**ऐसा ठोस यह सनातन सिद्धांत है।**
हमारी मुक्ति ब्रह्मस्वरुपी है।
गीता के *'ब्रह्मभूतः प्रसन्नात्मा...'* और शिक्षापत्री के *'निजात्मानं ब्रह्मरूपं...'* श्लोक के मुताबिक
श्रीजी महाराज की-परब्रह्म की सेवा का अधिकारी बनने के लिए जीवात्मा को ब्रह्मरूप होना ही पड़ता है।
वच. लोया 7 में भी महाराज ने बताया है कि जो ब्रह्मरूप हो उसे ही परब्रह्म की सेवा का अधिकार है।
और...
ब्रह्मरूप होने के लिए वच. म. 30 और अमदावाद 2 के मुताबिक
सनातन साकार ब्रह्म को परम सत्य मान कर उसका मनन द्वारा निरंतर संग करना चाहिए।

प्रणवो धनुः शरो ह्यात्मा ब्रह्म तल्लक्ष्यमुच्यते।
अवमत्तेन वेद्धव्यं शरवत्तन्मयो भवेत्॥ *(मुंडक उपनिषद्, २-२-४)*

इस प्रकार साकार अक्षरब्रह्म का साक्षात् संबंध और प्रसंग होगा
तो ही जीव ब्रह्मरूप होकर पुरूषोत्तम में निर्विकल्प रूप से जुड़ सकेगा
और
इसलिए ही गीताजी में भी कहा है–

'ज्ञेयं यत्तत्प्रवक्ष्यामि यज्ज्ञावामृतमश्नुते।'

अर्थात्– जो जानने योग्य हैं और जिसे जान कर अमृत रूप मुक्ति पाई जा सकती है, उसे मैं तुम्हें बखूबी कह रहा हूँ।
अनादि महामुक्त गोपाळानंदस्वामी ने अपने भाष्य में *'ज्ञात्वा'* शब्द का *'साक्षात् बुध्वा'* अर्थ करके
आत्यंतिकी मुक्ति के लिए अक्षरब्रह्म का साक्षात् प्रसंग ही निर्देशित किया है।
यूं परब्रह्म स्वरूप में परम अद्वैतभाव से –फिर भी स्वामीसेवकभाव से जुड़े रहना
और

हरिमय-हरिप्रेरित ऐसा पराभक्ति युक्त अखंड जीवन जीने की- आत्यंतिकी मुक्ति की शुरुआत
'गुणातीत पुरुष' द्वारा ही होती है।
(2) कई अवतार आए-लेकिन कार्यकारण के भाव से !
और...
उस लक्ष्य से सभी अपना-अपना कार्य करके अंतर्धान हो गए।
जीव के *'कारण'* और *'महाकारण'* के भावों को टाल कर किसी ने कल्याण नहीं किया।
महाराज ने वच. म. 26 में वह स्पष्ट किया कि अन्य धामों और लोक में गुण के, कर्तव्य के और साधना के राग रह गए।
जितनी उपासना उतनी प्राप्ति हुई।
विपरीत परिस्थिति में राधाजी जैसे पर भी गौलोक में गुण का भाव हावी हो गया
और
जय विजय को भी वैकुंठधाम में से गिरना पड़ा।
यूं **ऐसे गुणमय स्थानों को महाकाल असर कर जाता है !**
स्वामी की बात में लिखा कि गौलोक के मुक्त को प्रेम अधिक है और बद्रिकाश्रम के मुक्त को तपत्याग अधिक है।
जबकि अक्षरधाम का मुक्त ब्रह्मरूप है।
यूं तीन देह के भाव को टाल कर ब्रह्मरूप होकर परब्रह्म में जुड़ने का मार्ग
भगवान स्वामिनारायण ने साकार ब्रह्म द्वारा ही प्रस्तुत किया।
निराकार ब्रह्म को-अक्षर के प्रकाश को *'सच्चिदानंद ब्रह्म'* समझ कर उसकी उपासना से
या
उसके साथ तादात्म्य करने से जीव का मूल अज्ञान-महाकारण शरीर के भाव टलते नहीं हैं।
कोटि साधन करने के बाद भी बड़े-बड़े ऋषिमुनियों के विषय रस गए नहीं, यह सभी जानते हैं।
भगवान या भगवान के सनातन अक्षरधाम ऐसे मूर्तिमान *'अक्षरब्रह्म'* का
या
उस स्वरूप के साधर्म्य को पाए अनादि महामुक्तों का
जब तक संबंध न हो जाए और उसके प्रति निर्दोषभाव न हो जाए
तब तक लिंग देह पिघलता नहीं है
और
काम तथा मान के रूप में जीव में रहे अव्यक्त राग और रस हमेशा के लिए टलते नहीं हैं।
इसलिए ही भगवान स्वामिनारायण ने अपने धाम को पृथ्वी पर लाकर और गुणातीत परंपरा सतत् जारी रख कर
इस ब्रह्मांड के लिए अक्षरधाम का अर्चिमार्ग हमेशा के लिए खुल्ला कर दिया।
शास्त्र की दृष्टि से भी–

भिद्यते हृदयग्रन्थिच्छिद्यन्ते सर्वसंशयाः।
क्षीयन्ते चास्य कर्माणि तस्मिन् दृष्टे परावरे।। *(मुंडक उपनिषद्, 2-2-8)*

यूं *'एकम्-अद्वितीयम्'* नारायण ऐसे भगवान को पहचान कर उनकी उपासना-भक्ति करने के लिए
गीताजी में दर्शाए हुए *'अनादि मत्परं'* ऐसा *'अक्षरब्रह्म'*–
जो कि अनादि स्वरूप है-सनातन विभूति है-अंतिम आदर्श है
और
उसके द्वारा ही–उसकी भावना करने पर *'गुणातीतभाव'* आने से
नारायण सहज ही प्रगट होते हैं और अंगोअंग में निवास करके रहते हैं।

इस प्रकार ही आत्यंतिकी मुक्ति –
कि जहाँ परब्रह्म पुरुषोत्तम-नारायण के साथ का नित्य सिद्ध संबंध स्वतंत्र है, वह प्राप्त होती है।
(3) *'आत्मा में स्थित रह कर परमात्मा को धारण करना'*–
उस प्रकार से सद्. स्वरूपानंदस्वामी ने आत्मनिष्ठा के बल से
वृत्ति द्वारा किए साक्षात्कार की बात को सभी जानते हैं।
लेकिन मूर्ति का बल टूटते ही उदासीनता टालने
उनके संबंध वाली दादाखाचर के दरबार की खपरैल का ध्यान करना महाराज ने बताया।
यूं कई मूर्ति सिद्ध पुरुषों को सीधे-सीधा ही महाराज का संबंध और निश्चय होने पर भी
'गुणातीत ज्ञान' की कसर के कारण वे विक्षेप को पाये हैं।
इसीलिए जीतेजी ही भगवान का अपरंपार सुख लेने के लिए
भगवान स्वामिनारायण ने *'गुणातीत'* की अनिवार्यता बताने के हेतु से
परमहंसों को हर वर्ष एक महीने के लिए जूनागढ़ समागम करने जाने का आदेश दिया
और
शिक्षापत्री के श्लोक 116 में **निजात्मानं ब्रह्मरूपं** के रूप में *'ज्ञानप्रलय के भजन'* का प्रतिपादन किया।
और...
वच. म. 56, अंत्य. 24 और 36 में उनके संबंध वाले महामुक्तों को भी यदि स्त्रीधन का योग हो जाए तो–
ऐश्वर्य और मान से लिपटे रह कर कनिष्ठ त्यागी की स्थिति में भी वे रह पाएं या नहीं वह शंका जताई !
जबकि– दूसरी ओर, *'गुणातीत'* के संबंध से और वचन से या एकांतिक संत के वचन से
भगवान की मूर्ति सिद्ध करने वाले को जीतेजी ही *'निर्बंध और निष्काम भक्त'* गिनवाया।
स्वामी की बात– प्रकरण 3 की 25 और 42 में
ऐसे साधु के ज्ञान को *'आत्यंतिक प्रलय'* का सनातन ज्ञान बताया है
और
'पर्वतभाई एवं अंबरीष जैसे अनंत' – कह कर
ऐसे *'साधु के ज्ञान वाले'* के दोनों पाँव अक्षरधाम में हैं - यूं मर्म में बात करी।
महाराज से मिले हुओं में कुछ कसर रह जाए, क्योंकि मनुष्यभाव आ जाए !
जबकि गुणातीत पुरुष द्वारा या एकांतिक के प्रसंग से स्वरूप का ज्ञान पाए हुओं को
भगवान की अनुवृत्ति और अभिप्राय का जैसा है वैसा ख्याल पड़ता है।
इससे उसे विपरीत माहौल बाधा रूप नहीं होता।
यह *'ज्ञानसमाधि'* *'निर्विकल्प समाधि'* से भी अधिक और श्रेष्ठ है।
'साकार ब्रह्म' के संबंध से पू. भगतजी महाराज, पू. जागास्वामी, पू. कृष्णजी अदा, पू. बालमुकुंदस्वामी वगैरह
जीवंत साकार गुणातीतस्वरूप बने।
दो सौ लड़कों को मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी ने जूनागढ़ में *'ब्रह्मविद्या'* सिद्ध कराई
और
उनकी प्रकृति का संपूर्ण रूपांतर करके भगवान के अखंड धारक बनाए।
स्वामी कहते कि–
मैं करुं ऐसा यह एक-एक कल्याण करेगा।
'महाराज को देख कर जैसे समाधि और शांति होती है ऐसे उनके दर्शन से होती है'–
यूं निरंजनानंदस्वामी जैसे का उदाहरण देकर स्वामी ने तीसरे प्रकरण की बात में इसका स्पष्ट दर्शन भी कराया है।

जीतेजी ही सनातन अक्षरधाम की यह रीति गुणातीत मुक्तों द्वारा हमेशा के लिए खुल्ली रही है।
आज भी ऐसे संतों और जीवनमुक्तों द्वारा निर्दोषबुद्धि के सिद्धांत पर
यही सनातन सिद्धांत व्यापक रूप में फैल रहा है।
उनके संकल्प से आज भी एकांतिकभाव प्राप्त करना अत्यंत आसान बना है,
वह हमारा सच में महान अहोभाग्य है।
(4) इस सिद्धांत की दूसरी विशिष्टता यह है कि–
अनंत साधनों से पशु में से मानव हुआ उसमें अब तक के आध्यात्मिक विकास में शुद्धिकरण के जितने जितने प्रयोग हुए
उन सभी में सबसे पहला कदम निर्वासनिक होने का है और तभी अंततः परब्रह्म प्रगटा पाएंगे।
गुणातीतानंदस्वामी ने–
'इस साधु के प्रति सद्भाव–वही निर्वासनिकभाव का कारण है' – कह कर **आशीर्वचन** दिया कि–
ऐसे ब्रह्मस्वरूप संत की हर एक क्रिया दिव्य लगे और उसका गुण ही ले तो
अल्प जैसा या चाहे कैसा भी कामी, क्रोधी, लंपट जीव हो लेकिन वच. प्र. 58 के मुताबिक
अत्यंत निष्कामी और निर्बंध हो जाता है।
दूसरी ओर चाहे कैसा भी निष्कामी या निर्मानी, निर्लोभी पुरुष हो,
लेकिन ऐसे कल्याणदाता पुरुष में या एकांतिक भक्तों में मनुष्यभाव देखने से
उसका ज्ञान और स्थिति अभद्र बन जाती है।
यानि कि उसकी स्थिति में से वो गिर जाते हैं।
'अक्षरमत' का अनुसरण करने से
जैसे महाराज ने पात्रता देखे बिना लक्षावधि जीव का शुद्धिकरण करने के लिए
'आसरे में ही कल्याण' का मार्ग खुल्ला रखा,
वैसे विशिष्ट ऐसा यह *'निर्वासनिकभाव'*
गुणातीत पुरुषों ने अपने संबंध और सद्भाव से खुल्ला रखा !
***'अक्षरब्रह्म'* की यह एक सर्वोपरिता और विशिष्टता है**
और
ब्राह्मीस्थिति के लिए यूं उसकी अनिवार्यता रहती है।
दूसरी ओर– वच. प्र. 53 में
ऐसे प्रगट पुरुष में जातिभाव, मायिकभाव या ज़रा-सा भी मनुष्यभाव रखने वाले को
विमुख, अधर्मी और सभी मूर्खों का राजा कहा है।
इसीलिए ऐसे प्रगट पुरुषों में जातिभाव, मनुष्यभाव या मायिकभाव तनिक भी न रख कर,
सेवा हो तो करनी लेकिन असेवा में तो पड़ना ही नहीं-
यह रहस्य समझना भी जरुरी है।
सो ही– इस गुणातीत ज्ञान में वच. प्र. 16 और 49 के मुताबिक
सतत् अंतर्दृष्टि और प्रार्थना करने वाले को या **गरजु बन कर महिमा से सेवा करने वाले को**
कोटि कल्प तक साधन करने के बावजूद भी जो अक्षरधाम की प्राप्ति न हो वह
इस साधु को पहचान कर दो हाथ जोड़ने में – उनका जँचता करने में बख़्शिश मिल जाती है !
मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी ने कहा कि आज तो मौज दी है।
मौज का मूल्य होता नहीं है।
ऐसी ज्ञानदृष्टि उनके अनादि महामुक्तों द्वारा प्रगट रही है, रहेगी और रहेगी ही।

मानवजाति के लिए यह सब से बड़ी बख़्शिश है,
जो **आध्यात्मिक उत्कर्ष साधने वालों को देर-सवेर मान्य करनी ही पड़ेगी।**
इस प्रकार *'गुणातीतभाव'* को पाए हुए को भीतर से जगत छूट जाने पर
भगवान का अपंरपार सुख जीतेजी अखंड प्राप्त होता है–भोगा जाता है।
उसे ब्रह्मज्ञान होता है।
मायिकभाव टल जाकर जीव साकार ब्रह्म के संग से ब्रह्मस्वरूप होता है।
समग्र सत्संग को वह दिव्य मानता है।
आठों प्रहर ऐसा अहोहोभाव, ऐसी कृतार्थता और ऐसा पूर्णभाव माना जाता है–रहता है।
ऐसे भगवदी के प्रसंग से भी ऐसा ही *'नैमिषारण्य'* का– सुख, शांति तथा आनंद का अनुभव होता है।
वच. म. 30 और अमदावाद 2 के मुताबिक शुद्ध चैतन्य ब्रह्म को ही मान्य रखने से
हठ, मान, ईर्ष्या, असूया और मत्सर जैसे बारीक दोष निर्मूल हो जाते हैं
और
अनादि मुक्त की दशा सरलता से श्रेयार्थी साधक प्राप्त कर सकते हैं।
इन चार मुद्दों के कारण आत्मा और परमात्मा के इस सर्वोत्तम सत्संग को सिद्ध करने में
'गुणातीतभाव' को आदर्श रूप गिना जाता है।
वच. कारियाणी 7 के मुताबिक
उसके सिवा आत्यंतिकी मुक्ति को पाकर पुरूषोत्तम रूप होने की सिद्धदशा मिल ही सकती नहीं।
'गुणातीतभाव' को पाकर ही
'निरंजनः परम साम्यमुपैति' अथवा *'मद्‌भावमागताः'* का अक्षरधाम का साधर्म्यभाव पाया जाता है।
पुरूषोत्तमनारायण तो– *'जैसा उन्हें हम जानें, वैसे हमें बना कर'* वे निर्लेप रहते हैं।
यूं हमारी आत्यंतिकी मुक्ति का स्वरूप और प्रकार से–
'मुक्त' चैतन्यस्वरूप में स्वतंत्र और निर्बंध होकर
गुणातीत के साथ अभेदभाव से और महाराज के साथ सेवकभाव का भेद रख कर
पुरूषोत्तमनारायण के अनवधिकातिशय महिमा का परमानंद प्राप्त करता है।
ऐसी अत्यंत स्वतंत्र और सर्वोत्तम मुक्ति– परम कल्याण या परम पद
गुणातीत स्वरूपों के केवल अनुग्रह से हमें अत्यंत सुलभ है।
तो गुणातीत के इस प्रागट्य दिन पर हम सभी ऐसा सकंल्प करें कि–
हम महाराज के अखंड धारक बन कर, उनके गुणगान गाते हुए समग्र गुणातीत बाग को दिव्य मान कर
'अक्षरधाम का दिव्य सुख' अखंड लिया करें
और
प्रगट स्वरूप की ही अनुवृत्ति के मुताबिक सेवा-भक्ति किया करें...

अब जब जीव के अज्ञान और अविद्या को–हमारे करोड़ों जन्मों की अमावस्या के अंधकार को निष्ठा व माहात्म्य के दीपों से टालने वाले-'अमर गुणातीत भावना के व्यक्ति स्वरूप संत' – हमें मिल ही गए हैं, तो जैसे कि प.पू. काकाजी महाराज कहते थे– **भूतकाल बिल्कुल भूल कर** वर्तमान जीवन को संत के संबंध से नित्य नवीन उमंग से प्रकाशित करें। माया के अष्ट आवरणों को पार करके **नई दिव्य दृष्टि से प्रत्यक्ष स्वरूप को निहार कर** जीवन की पल-पल धन्य बनाएं। हमारे **भीतर के द्वंद्वों की** इन त्यौहारों के हवन में **आहुति देकर** जीवन को प्रशांत – निर्मल-शीतल बनाएं... **धाम-धामी-मुक्तों की महिमा हमारी साधना का आधार बने।** दसों-इन्द्रियों और ग्यारहवां मन केवल आपकी मूर्ति में निमग्न रख कर त्यौहारों के इन मंगलमय दिनों को सार्थक बनाएं...

✡✡✡

समन्वय महोत्सव... एक समन्वय !

प.पू. काकाजी स्वरूप प.पू. दिनकरभाई और पू. महेन्द्र बापु – गुरुहरि प.पू. काकाजी महाराज के इन दोनों पनौते पुत्रों से सारा गुणातीत समाज भलीभाँति परिचित है। अनंत दिव्य कल्याणकारी गुणों से 'विभूति' बन कर प.पू. काकाजी महाराज की अनुपम दिव्यता की देश-विदेश में खुशबू फैला रहे **प.पू. दिनकरभाई** और **प.पू. बापु** को सर्वप्रथम उनकी हीरक जयंती पर कोटि वंदन....

प.पू. काकाजी महाराज के शरीर छोड़ने के बाद इन्होंने अपने वर्तन से केवल उन्हें जीवंत मात्र ही नहीं रखा, बल्कि प.पू. काकाजी के संबंध वालों और संबंध में नए आने वालों के दिलों में–जीवन में भगवान व संत का प्राधान्य और गुरुभक्ति की मशाल प्रज्वलित भी रखी। पुराने या नए जिस-जिसने भी पू. बापु को प.पू. काकाजी में लय और लीन होकर 'स्वामिनारायण की' तीव्रता से धून करते एक बार भी देखा है, वह उन्हें कभी भुला नहीं पाएगा...

प.पू. काकाजी की परावाणी में हमने कई बार सुना है कि दिनकरभाई यहाँ से 5000 माईल दूर हैं, फिर भी वह मेरे दिल में–पास हैं और तुम मेरे नज़दीक बैठे हो तब भी दूर हो। यही बात विचार में डाल देती है कि प.पू. दिनकरभाई ने प.पू. काकाजी के साथ कैसा संबंध किया होगा ? आज भी प्रथम दर्शन में ही प.पू. दिनकरभाई की प्रभुता, सहजता, सरलता, विनम्रता, समता, साधुता, दिव्यता हर एक को सहज स्पर्श कर ही जाती है। इससे भी अधिक– इन दिव्य गुणों, ऐश्वर्य, सामर्थ्य का उन्हें तनिक भी 'भार' नहीं- कॉन्सियसनेस तक नहीं !

विदेश की धरती पर–शिकागो में प.पू. दिनकरभाई व प.पू. बापु की हीरक जयंती प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी, प.पू. साहेब, प.पू. निर्मलस्वामिजी एवं पू. शांतिभाई, पू. भरतभाई, पू. वशीभाई, पू. घनश्यामभाई आदि के सान्निध्य में संतों, मुक्तों व बहनों तथा देश-विदेश से पधारे कई हरिभक्तों ने खूब भक्ति भरे दिल से, उमंग, आनंद व उल्लास युक्त दिव्यता के माहौल में **4 व 5 सितंबर** को **'समन्वय महोत्सव'** के रूप में मनाई !

'मानवसेवा मंदिर' के हॉल में आयोजित तीन दिन के कार्यक्रमों में युवक मंडल ने भजन पर नृत्य प्रस्तुत किया... श्रीजी महाराज के जीवन और कार्य का दर्शन कराते हुए तथा उनके समय के एक प्रसंग को दर्शाते हुए युवक मंडल ने नाटक प्रस्तुत किया। ऐसे ही जनक राजा की समझदारी और राम भक्त हनुमानजी की सूझ बताते हुए दो नाटक प्रस्तुत किए। प.पू. दिनकरभाई तथा पू. महेन्द्र बापु के जीवन तथा कार्य का दर्शन विडियो द्वारा कराया। पाँच पुस्तक, विडियो-ओडियो सीडी तथा स्मृतिचिह्न इत्यादि मिला कर तकरीबन 60 प्रकाशनों का अनावरण भी हुआ।

भक्तों की भावना ग्रहण करते हुए प.पू. दिनकरभाई और पू. महेन्द्र बापु ने ताड़देव मंडल द्वारा बनाई पगड़ी स्वीकार कर सभी को अद्‌भुत दर्शन दिया। ताड़देव के भाईयों ने प.पू. गुरुजी द्वारा भेजे हार और भक्तों की प्रार्थना रूप कार्ड प.पू. दिनकरभाई और पू. महेन्द्र बापु को अर्पण किए।

प.पू. स्वामिजी, प.पू. साहेब, प.पू. दिनकरभाई, प.पू. निर्मलस्वामिजी, प.पू. भरतभाई ने अपनी परावाणी से सभी को तरबोर कर दिया। पू. अध्यात्मानंदस्वामी पू. प्रेमस्वामी, पू. सर्वमंगलस्वामी, पू. शांतिभाई, पू. वशीभाई तथा कई भक्तों ने प.पू. दिनकरभाई तथा पू. बापु के अद्‌भुत प्रसंग व अपने अनुभव बता कर उनके गुणों का दर्शन कराया।

सच, प.पू. दिनकरभाई के प्रति अखंड दिव्यभाव और माहात्म्य से जुड़े युवकों की श्रद्धा, जोश, परिश्रम, सूझ और भक्ति अजोड़ थी। सारे महोत्सव की मानो वे चाबीयाँ थीं। पिछले एक महीने से रात को दो-दो बजे तक कोई सोता नहीं था। ऑफिस भी जाना और साथ-साथ महोत्सव की तैयारियाँ भी करनी ! पुस्तक प्रकाशन के लिए तो दो युवकों ने अपनी नौकरी तक छोड़ कर सेवा करी ! गृहस्थ भक्तों तथा युवतियों ने भी अनोखे भाव से इस सेवा कार्य में सहयोग दिया था... यूं, **समन्वय महोत्सव यानि– शिकागो-पवई के भक्तों की सेवा का... पूर्व और पश्चिम के विज्ञान और धर्म का, ज्ञान और भक्ति का, सेवा और महिमा का, उमंग और प्रार्थना के समन्वय का भव्य दर्शन कराता– आनंद कराता महाउत्सव था।**

30 वर्ष पहले प.पू. काकाजी द्वारा बोए बीज के वृक्ष के ऊपर लगे मीठे फल– यानि, प.पू. दिनकरभाई की साधुता, नम्रता, विवेक, वात्सल्यभाव, माहात्म्यसहित भक्ति मानो सारे सत्संग समाज में बँट कर फैल गई हो, ऐसा दिव्य दर्शन करके सहज ही प.पू. काकाजी के प्रति दिल नतमस्तक हो जाता है। तो दूसरी ओर– ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी के वचन की ओर सतत् निगाह रख कर **प.पू. दिनकरभाई के पास सेवकभाव** रखते हुए-**उन्हें आगे रख कर** पू. बापु द्वारा करी गई भक्तों की संभाल-परवरिश को भी कोई भुला नहीं पाएगा। और... **इसी में ही तो पू. बापु का बड़प्पन समाया**

है-गरिमा निहित है ! सो, धन्य प.पू. दिनकरभाई को ! धन्य पू. बापु को ! धन्य ऐसे युवकों-भक्तों को और इससे भी अधिक—इन सभी को घड़ने वाले अद्‌भुत चैतन्यशिल्पी गुरुहरि प.पू. काकाजी को कोटि-कोटि वंदन !

✡✡✡

ताड़देव की गतिविधियाँ....

प.पू. गुरुजी के अति आग्रह के वश होकर **22 सितंबर** की शाम को केन्द्रीय वस्त्र मंत्री **माननीय श्री शंकरसिंह वाघेला साहेब** दिल्ली अशोकविहार स्वामिनारायण मंदिर ठाकुरजी के दर्शन करने पधारे...

सर्वप्रथम प.भ. राकेशभाई शाह, प.भ. विनोद (पंजाब) ने धून व भजन गाकर अपनी भक्ति अदा करी। तत्पश्चात् दिल्ली गुणातीत समाज की ओर से **प.भ. अनुज भईया** ने उन्हें राष्ट्रीय ध्वज के रंगों का हार अर्पण करके उनका स्वागत किया। फिर **प.भ. मल्कानी साहेब** ने सभी की ओर से माननीय श्री वाघेला साहेब को भक्तिभाव व कलात्मक ढंग से बहनों द्वारा बनाई गई रजवाड़ी पाघ व दोशाला पहना कर उनका सम्मान किया। प.पू. गुरुजी ने प.पू. काकाजी के हस्ताक्षर वाले गिलासों में प्रसाद दिया... प.भ. मल्कानी साहेब ने उनके मंदिर आने निमित्त भावपूर्ण शब्दों से आभार व्यक्त किया। प.पू. गुरुजी के आशीर्वचन के बाद मा. श्री शंकरसिंह वाघेला साहेब ने स्वामिनारायण धर्म के प्रति अपने विचार प्रगट किए और प.पू. गुरुजी से आशीष याचना करी।

दरअसल दिल्ली मंदिर से जुड़े तेजस्वी बच्चों को मा. श्री शंकरसिंह वाघेला साहेब द्वारा एवार्ड्स व स्कॉलरशीप देने का कार्यक्रम रखा था। पर, अत्यधिक व्यस्तता के कारण उनके पास समय की थोड़ी कमी होने से प्रसाद लेकर उन्होंने विदाई ली। सो, सभी लड़कों को **प.भ. मल्कानी साहेब** के वरद् हस्तों तथा लड़कियों को **प.पू. दीदी** के वरद् हस्तों एवार्ड्स व स्कॉलरशीप दी गई !

हम सभी जानते हैं कि अध्यात्म के पथ पर चलते मुमुक्षुओं को हँसते - खेलते आनंद कराते अग्रसर करने का प.पू. गुरुजी का ढंग सबसे निराला ही है... उनका हर एक चरित्र भगवान स्वामिनारायण एवं मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी की सिद्धांतिक बातों को मद्देनज़र रख कर ही होता है। जैसे श्रीजी महाराज ने **'वसुधैव कुटुंबकम'** की भावना को ही सत्संग की नींव बताया। वचनामृत अंत्य. 21 में भगवान स्वामिनारायण ने कहा भी कि—

'...ऐसे जो दृढ़ सत्संगी वैष्णव हैं वही हमारे तो सगे संबंधी हैं और वही हमारी बिरादरी है व जीतेजी भी ऐसे वैष्णवों के साथ ही रहना है एवं श्रीकृष्ण भगवान के धाम में भी ऐसे वैष्णवों के साथ ही रहेंगे, ऐसा हमारा निर्णय है और तुम्हें भी ऐसा ही निर्णय रखना चाहिए !'

इसी कल्याणकारी योजना को सर्वोच्च शिखर पर ले जाने के लिए गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज व गुरुहरि योगीजी महाराज एक अद्‌भुत जीवन जीए। और... **प.पू. काकाजी महाराज** ने इसी अभिप्राय को साकार रूप देने **पू. कांतिकाका** के संग ऐसी अद्‌भुत आत्मीयता से लगातार चालीस साल तक जीकर **राम-लक्ष्मण के भ्रातृप्रेम का दर्शन कराया** और हम सब के लिए एक आदर्श रखा। इतना ही नहीं—बल्कि एक सुहृद्-आत्मीय गुणातीत समाज की रचना करके मानो दिगंत में डंका बजा दिया ! उन्होंने कभी अपनी ओर अधिक लोगों की भीड़ आकर्षित करके कीर्ति पाने की चाहना नहीं रखी...

प.भ. मल्कानी साहेब एवं दिल्ली गुजराती समाज के प्रमुख श्री मोहितभाई पारेख के बीच प.पू. गुरुजी की निश्रा में सम्मानित मा. श्री शंकरसिंहभाई वाघेला—वस्त्रमंत्री, भारत सरकार

प.पू. गुरुजी भी आज प.पू. काकाजी के ही ऐसे सिद्धांतिक उसूलों पर संबंध में आए सभी के जीवन में भगवान व संत का प्राधान्य देकर आत्मीय दिव्य परिवारों का सर्जन करने में निरंतर जुटे हुए हैं। उस हेतु अथक् परिश्रम लेकर कई सालों से वे नए-नए तरीके—उपाय निकालते रहते हैं... जैसे कि — सत्संग के जो परिवार में देवरानी-जेठानी दो सगी बहनों की भाँति रहे, उन्हें प्राईज़ देने की स्कीम निकाली... दूसरे साल सत्संगी बच्चों को 85

प्रतिशत या उससे अधिक मार्क्स लाने पर प्राईज़ देने की स्कीम निकाली... तीसरे साल–जो पति-पत्नी ३६ के आँकड़े की तरह नहीं, बल्कि ६३ के आँकड़े की तरह आपस में एक-दूसरे का स्वीकार करके रहें, उन्हें प्राईज़ देने की स्कीम निकाली !

गुणातीत स्वरूपों व गुणातीत समाज के कई मुक्तों के मुख से हम सभी ने अक्सर सुना है कि– **कुछ नया ना करें–तो वो गुरुजी नहीं।**

सो, समारोह समाप्त होने की ही तैयारी थी कि प.पू. गुरुजी ने अचानक सभी को मानो सरप्राईज़ देते एक अत्यंत विशेष रहस्यमयी घोषणा करी।

पानीपत से आते दो भाई प.भ. पुनीतजी व प.भ. नवनीतजी से सारा सत्संग समाज भलीभाँति परिचित है। इन दोनों भाईयों पर अंतर की प्रसन्नता व्यक्त करते हुए प.पू. गुरुजी ने उन्हें **'आदर्श बंधु जोड़ी–२००४'** का एवॉर्ड देकर नवाजा और... साथ ही अपने दिल के उद्‌गार इस प्रकार व्यक्त किए–

'मैंने कई बार कहा हुआ है कि जो फेमिलीझ में देवरानी-जेठानी दो सगी बहन की भाँति रहती हों, सास और बहु माँ-बेटी की तरह रहती हों, हस्बंड एण्ड वाईफ ६३ के रिलेशन पर हमेशा रहते हों–ऐसे जोड़े अगर हमारे सत्संग में हों, तो हम इनको जरुर एवार्ड देंगे... खूब खुशी की एक बात है कि मुझे ऐसे दो भाई मिले कि कोई संपत्ति, कोई प्रलोभन, कोई लालच, कोई महत्त्वाकांक्षा, कोई माया, घर की स्त्रियाँ भी–मैं तो यहाँ तक कहूँगा कि भगवान भी योगमाया फैलाएं, लेकिन वो इन भाईयों की एकता को कभी तोड़ नहीं सकते। ऐसे हमारे पानीपत के ***पुनीत और नवनीत*** *हैं। बहुत छोटी उम्र में इनके फाधर एक्सपायर हो गए। ये पुनीत ने सारा बिजनेस संभाला–बढ़ाया करा। आज दोनों भाई उसके सरीखे हकदार हैं। लेकिन अगर पुनीत यदि नवनीत को कहे कि तू ज़रा बाहर एक घंटा खड़ा रह। तो जस्ट लाईक हिज़ सन, जबकि– आजकल तो अपना लड़का भी ऐसा नहीं रहेगा; पर नवनीत सोचेगा नहीं कि मुझे क्यों खामुखाँ बाहर खड़ा करा है। और... इसी तरह अगर किसी बात पर पुनीत को कहा जाए कि इस संपत्ति पर से तू तेरा हक छोड़ दे; तो भले सारा डेवलपमेन्ट पुनीत ने करा है, लेकिन वो अपना पूरा हक छोड़ कर सारा का सारा खुशी-खुशी नवनीत को दे देगा। इनकी ऐसी बातें मैंने जब-जब सुनी हैं, तो* ***मेरी आँखों में पानी आ गया है*** *कि भाई-भाई के बीच में यह कैसा रिलेशन हैं !!!'*

तत्पश्चात् प.भ. पुनीतजी ने प्रार्थना रूप कहा कि– गुरुजी ! हमारे जीवन में जो कुछ भी सुख-संपदा-शांति है, वह केवल आपके आशीर्वाद से है। हमें आपस में जोड़ने वाली मुख्य कड़ी आप ही हैं। बस हम आपको केन्द्र में रख कर आपका गौरव बढ़ा सकें...

धन्य हैं प.पू. गुरुजी को और उनके द्वारा तैयार हुए ऐसे परिवारों को !

✡✡✡

श्रवण, मनन, निदिध्यासन

- 'स्वामिनारायण-स्वामिनारायण' धून 'रामबाण' इलाज है, 'अमोघ' शस्त्र है और अपने यहाँ तो इतना आसान है कि प्रगट संत की स्मृति सहित करो तो इन्सटन्टेनियसली इफेक्टीव। मानो स्वामिनारायण-स्वामिनारायण.... ये सारा कम्पयूटराईज़्ड है।
- एक महीने के इस शिविर में हम ऐसी कथा सुन जाएं, ऐसा भजन कर जाएं कि पूरे साल यह 'रीजेन्युएटींग-रिफ्रेशर्स कोर्स' हमें काम आता रहे।
- बहुत बार संत की बात केवल हमारे कान सुनते हैं। हमारा मन तो और कहीं विचारों में घूमता रहता है। सो ही हम में बरकत नहीं आ पाती और हमें प्रभु की शक्ति के अनुभव भी नहीं होते।
- स्वामिनारायण भगवान ने धरती पर आकर आध्यात्मिकता में एक ऐसी एड्वान्समेन्ट करी, ऐसे कम्पयूटर्स कहो– सेटेलाईट्स कहो–जिसके साथ अपना कनेक्शन कर दो–काकाजी हैं, पप्पाजी हैं, स्वामिजी हैं, महंतस्वामी हैं, प्रमुखस्वामी हैं... इनके साथ अपना एक अटैचमेन्ट हो जाना चाहिए... फिर सब हल आसानी से निकलते जाएंगे। ऋषियों-योगीयों-मुनियों को जो सिद्धि सालों की तपस्या- साधना के बाद प्राप्त होती है, वो हमें आसानी से हो जाएगी।
- हर चीज में एकाग्रता होनी चाहिए। फिर चाहे वह भजन करने में, खाना खाने में ! वॉकिंग करते समय या प्राणायाम करने में भी हमारा वहाँ पूरा कॉन्सन्ट्रेशन होना चाहिए। तभी उसका असर-फायदा हम महसूस कर पाएंगे।

❋ एक साधु बापा के पास बैठ कर छत पर लगे पंखे को लगातार देखे जा रहा था। तब बापा एकदम बोले कि– पंखे की तीन पंखुड़ियाँ हैं, तुम्हारे देखते रहने से वो चार तो होने वाली नहीं हैं।

असल में बापा हमें सिखाना चाहते थे कि मैं जो बातें कर रहा हूँ, वो ध्यान से-इन्द्रियाँ-अंतःकरण और जीव टोटल पिरो कर सुनो।

❋ अपने यहाँ यह नई चीज है। महाराज ने ऐसी विभूतियाँ छोड़ दीं, जो तुम्हें एकाग्र कर दें। साधना में तीन फेझ आते हैं... शुरुआत में महाराज हमें साधु द्वारा मूर्ति बख़्शिश दे देते हैं... उसका चसका लगा देते हैं, उसके बाद वे अपनी मूर्ति वापिस ले लेते हैं। फिर हमें वो मूर्ति हाँसिल करनी पड़ती है। जैसे कि–

पॅरेडाईझ गॉट, पॅरेडाईझ लॉस्ट और पॅरेडाईझ कोन्कर्ड !

❋ प.पू. काकाजी की परावाणी एकाग्रता रख कर इन्द्रियाँ, अंतःकरण और जीव पिरो कर–एक आस्तिकभाव से सुनें कि ये जो बात करते हैं वो सही है। इन्हें हम से कुछ स्वार्थ-लेना करना नहीं है, बल्कि देना है।

❋ प.पू. काकाजी कई बार बोलते–

'कोई कहेशे रे आ संत तो बहु सारा रे
खरा कल्याणना करनारा रे
अेटलो ज गुण कोई '**हैयामां**' लेशे रे
ते तो बह्ममहोले जई पुगशे रे...'

यानि– दिल से इतना ही गुण लोगे कि ये साधु अच्छे हैं, यह मंदिर बहुत अच्छा है,

ये मूर्तियाँ बहुत-बहुत अच्छी बनी हैं–बस अपना काम पूरा हो गया... फिर भगवान व संत हमारे पीछे-पीछे आएंगे।

❋ जो काम करोड़ों सालों की साधना, तपस्या, योग, व्रत, दान नहीं कर पाते, वो काम ऐसे संत, ऐसे अवतार पुरुष फट् से कर देते हैं। प.पू. काकाजी के संबंध से आज ऐसा मौका मिला है। महाराज ने हमें एक ऐसी परंपरा में बिठा दिया है।

❋ प.पू. काकाजी बोले थे कि आत्यंतिक कल्याण का दाता (ताड़देव के) इस सोफे पर तुम्हारे सामने बैठा हुआ है। पर, हमने उनकी बातों को वाणी का विलास ही माना। आज वे बातें याद आती हैं कि ओहो कैसी भव्य प्राप्ति हुई है !

❋ संत के संबंध से हम में चेईन्ज आना चाहिए। चेईन्ज क्या ? एक पक्की निष्ठा-भरोसा हो जाना चाहिए कि मेरे भीतर, मेरे बाहर मेरे प्रभु हैं। जब भी कोई प्रॉब्लम आए तो 'स्वामिनारायण-स्वामिनारायण' करके भीतर में बैठे प्रभु को हिलाएं और बाहर 'मुक्तों' में प्रभु को देखें। पर, बाहर हम मुक्तों को देखते हैं-प्रभु को नहीं।

❋ प.पू. काकाजी की परावाणी की यह विशेषता है कि वह इटर्नल है। प.पू. काकाजी की कही बातें आज भी हमें किसी ना किसी रूप में प्रेक्टीकल समाधान दे जाती हैं।

❋ सत्-असत् की आम परिभाषा क्या ?

सत् यानि–प्रभु सत्य
असत् यानि–जगत मिथ्या

गुरुहरि योगीजी महाराज ने विशिष्ट अर्थ बताया था–
भगवान के भक्तों के गुणगान गाना–सत्।
अभाव-अवगुण व झंझट की बात करनी–असत्।

❋ सारा दिन हम असत् का ही धंधा करते हैं। सत् का तो पाँच-छः महीने में एकाध बार हम दिल की सच्चाई से किसी का गुणगान गाते होंगे। वर्ना अधिकतर समय तो फलां ऐसा है, फलां वैसा है–वही असत् चलता रहता है।

❋ हम 'राम-राम, कृष्ण-कृष्ण' बोलते रहते हैं–यानि ऐसे अवतार पुरुषों का रटन करते हैं। पर, जाहोजलाली–शानशौकत वाले कुब्लाखान, चंगीज़खान, हेन्री फोर्ड का कोई भजन करता है क्या ? अर्थात् प्रभु के संत, प्रभु की मूर्ति, उसका मंत्र हमारी असली संपत्ति है। बाहरी-लौकिक संपत्ति शांति नहीं देती।

❋ स्वामिनारायण मंत्र की विशेषता यह है कि वो लिविंग है, उसको प्रगटाई हुई विभूति मौजूद है। इसलिए इन्स्टन्टली इफेक्टिव है। राम को प्रगटाए हुए तुलसीदास जैसे संत होने चाहिए। कृष्ण को प्रगटाए हुए शुकदेवजी जैसे संत होने चाहिए। स्वामिनारायण ने यह एक नई चीज रख दी कि मेरे ब्रह्मस्वरूप संतों द्वारा मैं मानवस्वरूप में अखंडित प्रगट रहूँगा।

❋ शास्त्रों में शबरी के बेर, विदुर की भाजी, सुदामा के तांदुल का जिक्र आता है। तो क्या सारी जिंदगी भगवान ने और कुछ नहीं खाया होगा ? राम और कृष्ण तो राजा-महाराजा थे; उन्होंने तो और भी अच्छे-अच्छे भोजन खाए होंगे। पर शास्त्रों ने प्रभु व भक्तों की भावना, संबंध, सादगी, सरलता को ही सराहा।

❋ यह मंदिर अनोखा है, यह फिलॉसॉफी अनोखी है, यह लिविंग स्वामिनारायण महामंत्र अनोखा है, ये प्रभु अनोखे हैं। सायन्स की टॅक्नोलॉजी में कैसी एड्वांसमेन्ट हुई है ? बीस साल पहले कहीं कोई मैसेज भेजना होता था,

तो फोन पर कितना जोर से चिल्लाना पड़ता था ? तब भी मॅसेज मुश्किल से पहुँचता था और आज लंदन अमेरिका-हिन्दुस्तान के छोटे से गाँव के अंदर भी कोई काग़ज़ या मैसेज पहुँचाना हो, तो मिनिटों में पहुँच जाता है। वो जैसी एड्वान्समेन्ट हुई है, ऐसी एड्वान्समेन्ट भगवान स्वामिनारायण ने अध्यात्म में करी है ! अक्षरब्रह्म को लाकर इनकी परम चेतना धरती पर मानवस्वरूप में अखंडित रख दी। यह एक सेटेलाईट रख दिया है। बस इनकी स्मृति करके 'स्वामिनारायण' मंत्र आजमाओ।

✱ यहाँ जितने भी बैठे हैं, उन सभी ने अनुभव किया है कि– धून करी है जब भी, तब अशक्य-असंभव काम भी यहाँ शक्य हुए हैं। सरकार द्वारा प.पू. काकाजी महाराज की स्टेम्प निकलना इसका मूर्तिमान एग्ज़ाम्पल है।

✱ हम सब विचार करें कि 'स्वामिनारायण' महामंत्र को गायत्री मंत्र से लाखों गुणा पॉवरफुल क्यों कहा है ? क्या वो नापातोली करी हुई है ? इस मंत्र की वो पोटेन्श्यालीटी इसलिए है कि मंत्र मूर्तिमान करी हुई विभूति मानव स्वरूप में धरती पर मौजूद रही है। अर्जुन के सारथी श्रीकृष्ण मानव स्वरूप में अर्जुन के साथ थे, तो अर्जुन के कुरुक्षेत्र का अंत आया। वैसे हमारे हर एक के भीतर कुरुक्षेत्र है... ऐसे संत की स्मृति करके इस मंत्र का जाप करेंगे तो हमारे कुरुक्षेत्र का भी अंत आएगा ही।

✱ प.भ. काशीरामभाई का पूर्व का संबंध जरुर होगा, जो इतनी आत्मीयता से वे सत्संग से जुड़ गए। वे मिनिस्टर रहें हैं, इस कारण उनसे हमारा अटैचमेन्ट नहीं है-ना कभी था। पर, हमारे हर काम में अपनी पोझीशन, अपना स्टेटस, अपनी व्यस्तता देखे बिना हमारे साथ जो अपनेपन से वे खड़े रहे–वह इनकी क्वालिटी है और वही सच्चा सत्संग है।

✱ भक्ति व प्रेम में फर्क क्या है ?
जगत में करो वो प्रेम और भगवान व संत के लिए करो वो भक्ति !
ऐसा अटैचमेन्ट उन्होंने यहाँ रखा। सो, राणा साहेब को खूब-खूब धन्यवाद ! राणा साहेब को आज मैं कहता हूँ कि जब भी कोई मुश्किल आए तो अलाद्दीन के चिराग जैसा 'स्वामिनारायण' मंत्र है। उसे आजमाना। प.पू. काकाजी कई बार कहते कि स्वामिनारायण मंत्र 'छूटथी वापरो'।

✱ प.पू. काकाजी टेप में बोले हैं कि स्वामिनारायण महामंत्र इतना लिविंग है कि यदि आप सवा घंटे तक अनुष्ठान करोगे, तो हम सब स्वरूप हिल जाएंगे। तुम्हारे विचार भी बंद हो जाएंगे। चाहे हम लंदन हों, अमेरिका हो, चंद्र पर हों–कहीं पर भी हों।
प.पू. काकाजी यह कहना चाहते हैं कि हम चाहे लंदन हों, अमेरिका हों, चंद्र पर हों या **'अक्षरधाम' में भी बैठे होंगे,** पर तुम्हारे द्वारा स्मृति करके किए भजन से हम हिल जाएंगे।
यह बात इसलिए शक्य है क्योंकि वे मूर्तिमान ब्रह्मतत्त्व है। शास्त्र में कहा है कि ब्रह्म सर्वत्र व्यापक है–हवा की तरह।

✱ प.पू. काकाजी स्थूल रूप से विद्यमान थे व शायद 1984 में दिल्ली आए हुए थे। तब मुंबई से किसी एक मुक्त का कुछ प्रॉब्लम बारे फोन आया। तो प.पू. काकाजी एक ही वाक्य बोलते रहे कि हवा त्यां नथी ? यानि– क्या हवा वहाँ नहीं है ? बाद में प.पू. काकाजी बोले कि आप मुझे वहाँ से फोन क्यों करते हैं ? इसके बजाय वहाँ धून करो, तो वहीं जवाब मिल जाएगा।
असल में **प.पू. काकाजी हमें प्रेक्टिस देते थे कि जब मैं स्थूल रूप से आपके पास नहीं भी होऊँगा, पर तुम यदि मुझे याद करके 'स्वामिनारायण' मंत्र का जाप करोगे, तो तुम्हें समाधान मिल जाएगा, हल मिल जाएगा-शांति मिल जाएगी।**

✱ साधु की हर एक क्रिया आम लोगों जैसी ही होती है, पर हमारे समझने में फर्क पड़ जाता है। साधु की इन्टेन्शन अलग होती है। बहुत सालों पहले भी मैंने एक बात करी थी। शुकदेवजी भागवत् की कथा करते थे, तो सुबह उठ कर हर एक ऋषियों को खुद जाकर कथा सुनने आने के लिए विनती कर आते थे। इसका आम थिंकिंग हम यही निकालेंगे कि खुद कथा कर रहे हैं, सो लोगों को इकट्ठा करके, कीर्ति पाने शुकदेवजी ऐसा कर रहे हैं। पर, शुकदेवजी ऐसे संत नहीं थे। असल में शुकदेवजी को भगवान श्रीकृष्ण के लीलाचरित्र की महिमा का ठीक से ख्याल था... उनकी भावना यह थी कि सब ऋषि यह कथा सुनेंगे और इनको कथा के पुण्य का जो फल मिलेगा, उसमें से दस प्रतिशत मुझे भी मिल जाएगा, क्योंकि मैंने इन्हें कथा में बुलाया है। देखो हमारे समझने में फर्क पड़ गया ना ? शुकदेवजी प्रभु की महिमा से यानि भगवान श्रीकृष्ण की महिमा की वजह से कह रहे थे। हम मानते हैं कि संत लोग अपनी महिमा बढ़ाने के लिए कहते हैं।

अन्नकूटोत्सव...

13 नवंबर, शनिवार, 2004 की सुबह 11:30 बजे 'ताड़देव' मंदिर में

गुणातीत कुनबे के वार्षिक स्नेहमिलन के साथ

श्री अक्षरपुरूषोत्तम महाराज एवं सभी गुणातीत स्वरूपों की मूर्तियों को वार्षिक महाभोग लगा कर 'अन्नकूट आरती' होगी... इस मंगलकारी अवसर पर सपरिवार ईष्ट मित्रमंडली सहित उपस्थित रहने का आपको हार्दिक निमंत्रण है।

स्थान :

श्री अक्षरपुरूषोत्तम (स्वामिनारायण) मंदिर, *'ताड़देव'*, काकाजी लेन, स्वामिनारायण मार्ग, अशोक विहार-III, दिल्ली-110 052

व्रतोत्सवसूची

(1)	दि. 1.10.2004,	शुक्रवार	–	प.पू. दिनकरभाई का प्रागट्य दिन
(2)	दि. 2.10.2004,	शनिवार	–	गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज – स्मृति पर्व
(3)	दि. 8.10.2004,	शुक्रवार	–	श्रीजी महाराज – स्मृति पर्व
(4)	दि. 9.10.2004,	शनिवार	–	एकादशी, ब्र. स्व. योगीजी महाराज – स्मृति पर्व
(5)	दि. 10.10.2004,	रविवार	–	ब्र. स्व. काकाजी महाराज – स्मृति पर्व
(6)	दि. 11.10.2004,	सोमवार	–	मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी और ब्र. स्व. भगतजी महाराज– स्मृति पर्व
(7)	दि. 14.10.2004,	गुरुवार	–	नवरात्रे प्रारंभ
(8)	दि. 22.10.2004,	शुक्रवार	–	दशहरा, प्र. ब्र. स्व. प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी का पार्षदी दीक्षा दिन
(9)	दि. 24.10.2004,	रविवार	–	एकादशी, व्रत
(10)	दि. 28.10.2004,	गुरुवार	–	शरद्पूर्णिमा, मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी का प्रागट्य दिन प्र. ब्र. स्व. प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी का भागवती दीक्षा दिन प. पू. दिनकरभाई की प्रागट्य तिथि
(11)	दि. 30.10.2004,	शनिवार	–	ब्र. स्व. प.पू. जागास्वामी की जन्मजयंती
(12)	दि. 8.11.2004,	सोमवार	–	एकादशी, व्रत
(13)	**दि. 10.11.2004,**	**बुधवार**	**–**	**धनतेरस – दिल्ली-मंदिर में 'महापूजा', सायं 7:30 से 9:00**
(14)	दि. 12.11.2004,	शुक्रवार	–	दीवाली
(15)	दि. 13.11.2004,	शनिवार	–	अन्नकूटोत्सव–वार्षिक स्नेहमिलन, नूतन वर्ष प्रारंभ
(16)	दि. 14.11.2004,	रविवार	–	भैयादूज
(17)	दि. 17.11.2004,	बुधवार	–	लाभपंचमी
(18)	दि. 22.11.2004,	सोमवार	–	प्रबोधिनी एकादशी, व्रत

R.N.I. 28971/ 77
Air Mail
'**Bhagwatkripa**' Bimonthly Magazine
Despatched on 15th of alternate months

TO,

If undelivered please return to :—
Printer, Publisher, Editor :—
SHRI PRABHAKER RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI
'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg,
Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 2722 9327
Printed at : **Delux Offset Printers**
308/4, Shahzadabagh, Opp. Rohtak Road, Daya Basti, Delhi